Live in the Spirit

सीड़ फॉर लिविंग

ब्रदर मैन्युएल मिनिस्ट्रिज मासिक प्रकाशन नवंबर २०११

जब परमेश्वर दरवाजा बंद करते है...

...तो कहीं ना कहीं तो खिड़की भी खोलते है

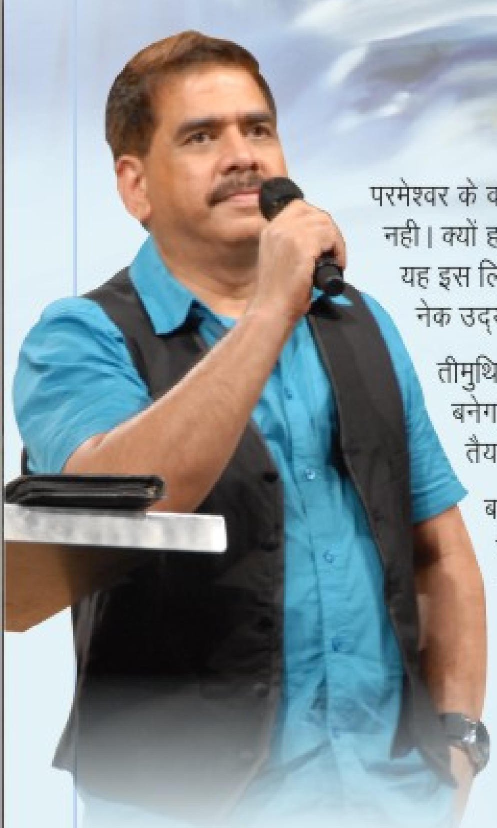

परमेश्वर के वादों के योग्य बनने के लिए ऐसी बहुत सी चीजें है जिन्हें हमे करना है, और जो हम अब तक करते नही। क्यों हम मे से बहुत से लोग शारीरिक रुप से ठिक नहीं कर रहें? क्यों हमे अब तक चंगाई नहीं मिली है? यह इस लिए क्योंकि हमने अपने आप को उस हद तक शुद्ध नहीं किया है कि परमेश्वर हमारा इस्तमाल उनके नेक उद्येश्यों के लिए कर सके।

तीमुथियुस की किताब कहती है कि, "यदि कोई अपने आप को इनसे शुद्ध करेगा, तो वह आदर का औजार बनेगा और पवित्र ठहरेगा; और स्वामी के काम आएगा, और हर भले काम के लिए तैयार होगा।" (२ तीमुथियुस २:२१)

बहुत से लोग मुखौटा पहनते है। वे बाहर से बहुत ही भले और अच्छे दिखाई देते है लेकिन अंदर से वे बिल्कुल ही इसके विपरीत होते है। बहुत से लोग दिखावा करते है। जब वे महत्वपूर्ण लोगों के इर्दगिर्द होते है तब वे नम्र व्यक्ति के समान बात करते है, लेकिन जिस क्षण वे घर पहुँचते है, तो अपने चहितों से बात करते हुए वे बहुत ही कठोर और अनुचित शब्दों का उपयोग करते है। तो परमेश्वर उनके भले उद्येश्यों के लिए ऐसे लोगों को 'आदर के औजार' के रुप में इस्तमाल नहीं करेंगे।

शैतान हमेशा हमारी बरबादी के नये नये मनसूबे बनाता रहता है। इन हमलों से बचने के लिए हमे पहले से ही तैयार रहना है। जरुरी नहीं की जो शक्तिशाली है वही लगातार विजेता रहेगा, लेकिन जो वास्तविक लढ़ाई शुरु होने से पहले ही अपने घुटनों पर जाकर उस लढ़ाई को जितता है वहीं विजेता ठहरेगा। एक इन्सान जो अपने घुटनों पर आता है, और सबकुछ परमेश्वर को समर्पण करता है, वह कभी भी पराजय, नही चखेगा।

और एक व्यक्ति जो अपने आपको शुद्ध करता है, और इस लायक बनाता है, कि परमेश्वर उसका इस्तमाल एक औजार के रुप में अपने नेक उद्येश्यों के लिए करें, वह अपने जीवन के हर एक भाग में भरपूरता से आशिर्वादित हो जाएगा जैसे सेहत, परिवार, और आर्थिक स्थिती जैसे अनेक रुप में। परमेश्वर के स्वर्गदूत उसको घेरे रहेंगे, आगे बढ़ायेंगे और उसकी रक्षा करेंगे। इस कारण यह बहुत जरुरी है कि हम लगातार अपने आपको शुद्ध करते रहें, केवल वर्तमान के लिए ही नहीं बल्कि आनेवाले भविष्य के लिए भी।

अगर आप वह औजार बनने के लिए राजी है जिसे परमेश्वर इस्तमाल कर सके तो, शैतान आपको, आपके परिवार, आपके पैसे, आपका घर, आपकी कलिसियाँ, आपका निर्धारित स्थान, या आपके देश को छू नहीं पायेगा।

लोग इस संसार के चीजों के पिछे भागने की वजह से नाखुश है। दिन रात कठीन परिश्रम करने के बावजूद वे खुद के लिए या अपने परिवार को संभाल सके उतना नहीं कमा पाते है। क्यों? यह इस कारण है क्योंकि वे परमेश्वर को भूल चूके है। वे भूल चूके है कि एक दिन का उपकार यह जीवन भर के कठीन परिश्रम से मूल्यवान है। परमेश्वर उन दरवाजों को बंद कर सकते है, जिन्हें कोई मनुष्य खोल नहीं सकता और उन दरवाजों को खोल सकते है जो कोई मनुष्य बंद नहीं कर सकता। जिस दिन इस बात को पूरे रुप से समझेंगे और इसका अवलोकन करेंगे, उस दिन आप एक नये सफर की शुरुआत करेंगे।

– ब्रदर मैन्युएल मेरगुल्याओं

KID'S CORNER

Frogive & Froget

Fran the Frog was the best chef in the whole swamp, and all the toads and frogs of the region enjoyed coming to her very select restaurant. One day, Toby the Toad, came to her restaurant.

When Fran's fine creations were brought before him, he complained about her dishes. This made Fran so furious that she went to the kitchen, came back with a frying pan, and whacked Toby squarely on the forehead.
A slight scuffle ensued.

Fran realised she should have controlled her temper, and she kept asking Toby to forgive her. But the toad was so angry that he said he could only forgive her if she handed him the frying pan so he could hit her back.

Then a very old toad entered the restaurant, shuffling along with the help of two crutches. "Wait Toby," said the old toad, "You can whack Fran after I've broken your leg. Remember that you are the reason why I have to walk with these crutches."
Toby didn't know what to say.

He recognised the old toad. It was Reddit, his old teacher. When Toby was small, Reddit had saved him from a bunch of young hooligans. In the process, Reddit had lost a leg. Toby remembered that it had all happened because he had been highly disobedient, but he had never given a thought to Reddit until now...

Toby now realised he was being very unfair to Fran. Everyone, including himself, made mistakes sometimes. And if we are to return blow for blow, wound for wound, all we are doing is prolonging the damage. So, even though his head still hurt, Toby decided to forgive her. Apology accepted, they spent the rest of the evening laughing at what had happened, and enjoying wonderful botfly burgers.

- Editorial Desk

येशू मसीह के धन्यवचन (बिएटिट्यूड्स)।

धन्यवचन जिसे हम अंग्रजी में 'बिएटिट्यूड्स' कहते है वह रोम के प्राचीन शब्द 'बिअतूस' से लिया गया है, जिसका मतलब है 'खुशी' या 'आशिषित'। लोगों की भीड देखकर येशू मसीहने यह धन्यवचन पहाड़ पर दिया। इसका उल्लेख मत्ती ५:३-१२ और लूका ६:२०-२३ में दिया गया है। फिर भी, यह दोनों वचन एक दूसरे से कुछ रिती मे अलग है।

वचन के अनुसार, येशूने जब लोगों की भीड़ को उनका पीछा करते हुए देखा तो वह पहाड़ पर चढ़ गया, और जब बैठ गया तो उसके चेले उसके पास आए और वह उन्हें यह कहते हुए उपदेश देने लगा कि:

धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं,

धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं,

धन्य हैं वे, जो नम्र हैं,

धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं,

धन्य हैं वे, जो दयावान हैं,

धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं,

धन्य हैं वे, जो मेल मिलाप करानेवाले हैं,

धन्य हैं वे, जिन पर प्रभू के कारण अत्याचार किया जाता हैं,

प्यारे भाईयों, फिलिप्पियों की किताब में संत पौलुस कहते है कि हमारा स्वभाव येशू मसीह के जैसा होना चाहिए, जो परमेश्वर का स्वरुप होने के बावजूद, उन्होंने अपनी तुलना उनके साथ करना इस बात को कभी अपने वश मे रखने की वस्तू न समझा। (फिलिप्पियों २:५-६)

हमारी आनेवाली अगली श्रृंखला में हम इन सारे आठ बिएटिट्यूड्स पर नमन करेंगे और उन्हें समझेंगे जो येशू चाहते है कि हम हमारे मन में बैठाये और परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी बने।

परमेश्वर आपको आशिर्वादित करें।

– संपादकीय डेस्क

– बहन लिनेट मेरगुल्याओं

स्त्रीयों की पुनःस्थापना!

१. संपूर्ण पवित्र शास्त्र में पूराने युग के वेश्याओं के व्यापार पर चर्चा की गई है। और आज के इस आधुनिक जमाने के किसी भी विवाद की चर्चा के मूल कारण को अगर आप खोजने जाओ तो वह आपको पवित्र शास्त्र के पहले किताब की ओर ही ले जाएगा – चाहे वह वेश्यापन हो, हत्या हो, या झूठ बोलना हो – पाप को आप चाहे जो भी नाम दो और उस पाप को आप इस किताब में पाओगे।

२. किसी और के बच्चे को जन्म देने के लिए अपनी कोख को किराए पर देनेवाली स्त्रीयों के विषय में बात करेंगे। समाज सुधारकों को लगता है कि उन्होंने यह प्रथा शुरु करके बांझ स्त्रीयों पर बडा ही उपकार किया है। अगर वे केवल यह जानते कि उत्पत्ति, जो पवित्र शास्त्र की पहली किताब है, वह इस विषय के बारे में क्या कहती है। जब साराने अपने पति अब्राहम को अपनी दासी हाजिरा के साथ सोने की सलाह दी, तो वह कुछ और नहीं लेकिन अपने और अपने पति के बच्चे के लिए हाजिरा की कोख किराये पर माँग रही थी। पाप की गंभीरता कभी भी बदल नही सकती, चाहे आप उसपर सोने का पानी चढाकर ढँक ले या इसे दुनियादारी का नया नाम दे, इससे कोई फरक नहीं पड़ता। सुनने मे शायद यह आकर्षित लगे, लेकिन गुलाब के फूल को आप किसी भी नाम से पुकारों फिर भी उसकी खूशबू वही रहती है!

३. वह सामरी स्त्री (कुछ कारण इस स्त्री का नाम नही दिया गया है) समाज के शुभचिंतकों के गुर्राने और तानों से बचने के लिए दोपहर की कड़ी धूप में कूएँ पर पानी भरने गई। फिर भी, हमारे येशू मसीह का कूएँ पर पहूँचना, शिष्यों का नगर में भोजन का प्रबंध करने जाना और उस सामरी स्त्री का कूएँ पर आना, इन सारी घटनाओं को कितनी खूबसूरती से एक साथ मिलाया गया था, ताकि यह एक इतिहास बने। इस बात से यह जाहीर होता है कि परमेश्वर एक विशिष्ट प्रकार की आराधना के खोज में है, जो मानव के लिए जीवन जल का स्रोत बन सकता है, और साथ ही एक पापी पे ऐसा प्रभाव कर सकता है कि वह उनके लिए एक शक्तिशाली साक्ष और प्रचारक बने।

४. मरियम, जिसने संगेमरमर का पात्र तोडा और उसके अंदर का इत्र प्रभू येशू के चरणों पर डाला, वह अपने निरंकुश तरीके से जीवन जिने के लिए जानी जाति है। इसलिए फरीसी जो उस स्त्री के इर्दगिर्द थे सोचने लगे कि "यदि यह भविष्यद्वक्ता होता तो जान जाता कि यह स्त्री कौन है और कैसी है।" येशू इस बात को भली भाँती जानते थे, लेकिन उस मुक्तिदाता के अंतिम शब्द यहीं थे "उसने अधिक प्रेम किया इसलिए उसे अधिक क्षमा किया गया है।" और "जहाँ कही भी यह सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहाँ उसके स्मरण में उसके इस कार्य का वर्णन भी किया जाएगा।"

५. जब फरीसी उस व्यभिचारीण स्त्री को खींचकर येशू के पास ले आये और उनसे उस स्त्री के किस्मत के बारे में सवाल करने लगे ताकि उन्हें सवालों के जाल में उलझा सके, और उनपर दोष लगा सके, उस वक्त येशूने झुककर भूमि पर क्या लिखा? और फिर उन्होंने कहा, "तुम में जो निष्पाप हो, वही पहले उस व्यभिचारीणी को पत्थर मारे।" सही अर्थ से समझाए तो, उस स्थानपर मौजूद लोगों में केवल येशू ही इस योग्य थे जो उस स्त्री को पत्थर मारकर उसकी हत्या कर सके। परंतु एक मिनट रुकिये, क्या ये वो ही नही जिन्होंने सीनै पर्वत पर अपनी उँगली से मूसा को दस हुकुम लिखकर दिये थे, जिस मे से एक यह भी था कि, "तू व्यभिचार न करना" और साथ ही इस पाप का दंड भी निश्चित किया था कि पत्थर मारकर उसकी हत्या की जाए? जी हाँ, वह इनकी की उँगली थी। और कोई नहीं लेकिन केवल वो ही जिसने इन हुकुमों को प्रारंभ किया उन्हें बदल भी सकता है।

६. "मैं हुकुमों को खारीज करने नहीं लेकिन उन्हें पूरा करने आया हूँ।" मेरे प्यारो, इसपर मनन करना।" वह स्त्री थी जिसके जरिये पाप संसार में आया और वह स्त्री ही थी जिसने पुनर्जीवित येशू को सबसे पहले देखा। और यह उसके लिए कितने आदर और उपकार की बात है!

हुकुम तो मूसा के द्वारा दिए गये है; परंतु अनुग्रह और सच्चाई येशू मसीह से आती है। (यूहन्ना १:१७) हल्लेलूयाह!!!

जागृती का सप्ताह

२८ सितंबर से ५ अक्तूबर

"बिना किसी विश्राम या राहत के एक मनुष्य उसके जीवन में केवल भटकता रहता है। लेकिन जो परमेश्वर में विश्राम करता है, वह स्वर्ग और उसके वादों के नजदिक आता है।"

मनुष्य की जरुरत को जागृत करके आशिर्वादित करना, जो स्वर्गो के तत्वों के अनुसार हो आज के शतक में आसान नहीं है। दैनंदिन झगडे और चिंता हमारे जीवन को अंदर बाहर से उलथ – पुलथ करने के लिए काफी है। लेकिन जागृती हमारे जीवन में एकता निर्माण करती है।

जागृती के इस सप्ताह में ज्यादातर 'हमारे अंदर परमेश्वर का मंदिर बने' इस बात पर जोर दिया गया है। हम जानते है कि हमारा शरीर परमेश्वर का सच्चा मंदिर है। जब हमारा शरीर एकता और सामंजस्य से कार्य करता है, तब परमेश्वर हमें उनका निवासस्थान बनाते है। वे आकर हमारे अंदर बस जाते है!

निरंतन समस्याएँ जैसे आरोग्य, आर्थिकता का संघर्ष और जीवन का आनंद उठाना जैसे परमेश्वर चाहते है, इसकी असमर्थता इन सबके लिए जागृती की जरुरत आन पड़ी है।

परमेश्वरने ब्रदर मैन्युएल के दिल पर यह डाला कि वे लोगों को सिखाए, कैसे वे परमेश्वर के साथ चले और उनके मार्गदर्शन के अनुसार काम करें। इसे पाने के लिए जन–समूह को हर एक क्षेत्र में शक्ती पानी है; उन्हें ऐसे अनुग्रह की जरुरत है जो अच्छे या बुरे समय में भी, उनका विश्वास परमेश्वर में बढ़ाता रहे; विश्वसनीयता से कैसे जीना है इस बात का ज्ञान उनको मिले – पहले अपने आप के साथ फिर परमेश्वर के साथ और फिर अपने चरवाहा के साथ – और हमे किसी मनुष्य में नहीं बल्कि केवल परमेश्वर में ही भरोसा रखना है।

जागृती का प्रमुख भाग है, मनुष्य को तोडना, बाँधना और नए सामर्थ्य से भर देना। पवित्र शास्त्र में परमेश्वर के साथ चलने के मार्गो को खोलकर बताया गया है, ताकि मनुष्य का जीवन जागृत हो जाए या नवनिर्माण हो जाए।

सप्ताह भर का यह जागृती का कार्यक्रम २८ सितंबर से ५ अक्तूबर तक एक अनोखे प्रकार से मनाया गया। जागृती के सप्ताह के पहले दो दिन का कायक्रम आय.इ.एस. माणिक सभागृह में हुआ जहा से इस सुहाने सफर की शुरुवात हुई और बाकी के पाँच दिन का कार्यक्रम जूहू के बिलाबाँग इंटरनैशनल स्कूल के हॉल में हुआ। एक जगह से दुसरे जगह यात्रा करना यह बात स्वयं ही हमे यह संदेश दे रही थी कि जागृती पाने के लिए हमारे अंदर सबकुछ बदलना चाहिए।

इस कार्यक्रम का सीधा प्रसारण हमारे मल्टी कॅमेराओं से इन्टरनेट के जरिये लाखों हजारों घरों के अंदर दुनिया भर में पहुचाया गया। इटली, ऑस्ट्रेलिया, यू. एस. ए., दुबई और कैनडा से लाखों लोगों ने इस कार्यक्रम का सीधा प्रसारण देखा, उसमें भाग लिया और आनंद और खूशी भरी प्रतिक्रियाएँ भी भेजी।

अपने ही खास ढ़ग से बहन लिनेट ने प्रभू वचन को उसके उगम और इस्तमाल के साथ उसके आशिर्वादित फायदों के साथ बाँटा। उन्होंने संशोधन किए हुए पवित्र शास्त्रों के वचनों को बाँटा और उनके शारीरिक उगमों का खुलासा किया उदाहरण के तौर पर कैसे परमेश्वर ने इस्त्राएल को आशिर्वादित होने के लिए चुना, जो इस पुथ्वी के उपर बराबर मध्य में है। क्या यह आश्चर्यजनक नहीं! पवित्र आत्मा से आलोकित होकर, उनके वचनों ने जीवन फूँका, लोगों की रुची बढ़ाई और प्रभूवचन, लोगों के कानों और दिलों के लिए जीवित बनाया।

ब्रदर मैन्युएलने लोगों को अपनी भूमी को उखाडने तथा अपनी नीजी बंधनों को तोडने के लिए तैयार किया। उन्होंने लोगों को सिखाया की कैसे अपनी भूमी पर चलना है, उसे सरल बनाना है और उसे सिंचना है। और उन्होंने कुछ तकनिके भी बताई जिससे हम अधिकार के साथ इस दुनिया में जी सके यह सिखाता है।

S परमेश्वर का वचन और उनके राज्य का रहस्य यह दृष्टांतों के स्वरुप में है, परंतु केवल जो चुना गया है वो ही उन्हें सीखेंगे और उसमें से खाएँगे। ब्रदर मैन्युएलने प्रभू के वचनों को तोडा, उन मे छिपे रहस्यों को खुला और अपने मेमनों को अनोखे ढ़ग से खिलाया। यह उनमे पवित्र आत्मा का यादगार कार्य है।

S मध्यस्थिति के लिए ताजा अभिषेक पाया गया। स्वर्गो को प्रार्थना से हिलाना और प्रभू के हृदय को छूना इन तरिकों को कृती में किया गया।

S पवित्र शास्त्र के अभ्यास की कला को अपने जीवन का एक भाग बनाना, ऐसे बहुत सारे लोग चाहते है। इस सत्य की किताब को उसके ज्ञान और आशिर्वादों को खुला किया गया और वचन कई लोगों के जीवन में जीवित हो गया। इस सत्य को समझते हुए की अंत के दिनों में हमे पवित्र शास्त्र पढ़ने या उसका दर्शन करने का भी मौका नहीं मिलेगा, हम सब जागृत हुए। नेहम्याह की किताब एक गँवाही है जहाँ लोगों ने नबी एज्रा से बिनती कि की वे प्रभू के वचन को पढ़े और वे लोग घंटो उसे सुनते रहें। हमारे सभागृह मे भी जनसमुदाय मे वही प्यास दिखाई दी!

S हमारा शरीर परमेश्वर का मंदिर है! उसे बाँधो! यह संदेश लोगों की तरफ जोरों से और साफ रुप से पहुँच गया स्त्रियों के दुपटटे प्रभू के लोगों के हाथ में कसरत के औजार बनते हुए दिखाई दिए। एक तरफ पुरुषों ने दुपटटे की इस ताकत को खोजा तो दुसरी तरफ स्त्रियों को दुपटटों के इस्तेमाल का दुसरा ढ़ग जो उनके स्नायू, हाथ और पाव को जो प्रभू के मंदिर मे बसते है, और आत्मिक युद्व का एक भाग है, उनके लिए इस्तेमाल करने का पता चला। जिम के मार्गदर्शकने अलग अलग व्यायाम प्रकार को दिखाया जो आपको हाथ, पाँव और पीठ की हड्डी के लिए सामर्थ्यवान बनाते है। बहुत सारे चंगे हो गए, ताजे हो गए और उन्होंने गँवाही दी कि इन व्यायामप्रकारों से उन्हें किस मात्रा में लाभ हुआ है, जो पवित्र आत्मा से मार्गदर्शित किए गय थे। इन तरंगों ने बहुत सारे लोगों को 'रजत उपावस' (50 दिनों तक नियमित जीने का ढ़ग, खाना, सोचना और विचार करना और परमेश्वर के एक संपूर्ण व्यक्ति को बनाना) इस बात के लिए तैयार किया।

अंत में जागृती के इस सप्ताह ने तोडने, बांधने और नवनिर्माण करने और आत्माविश्वासी, प्रभू पर निर्धारीत एक ऐसे स्काउट को तैयार किया जो स्वर्गीय पिता के लिए है।

इसे साफ रुप से कहा जा सकता है कि, "स्वर्ग का वादा किया हुआ जीवन अभी नजदिक ही है।" पुरा जनसमूह अपने दिलों में, मनों में, शरीरों में, आत्मा में, जीव में नया बनते हुए घर चला गया और आठ घंटे सो गया।

– संपादकीय डेस्क

गरीबी से उन्नति की ओर

बरताव और कार्य

जीवन में हमारी राह में बहुत सारी चुनौतियाँ आती है, लेकिन जिस नजरिए से हम उन्हें देखते और उनपर कार्य करते है, यह उनके नतीजों को तय करता है। एक इन्सान के इर्दगिर्द जो निजी आत्मिक वातावरण होता है, सच मानो तो वह इस जीवन का हिसाब है जो वह इन्सान हर रोज जीता है। तो हम क्या सोचते है, करते है, महसूस करते है, ग्रहण करते है, सुनते है, स्वीकारते या अस्वीकार करते है, यह सारी बातें हम पर असर करती है। और लंबी दौड़ में, हमारा जीवन हमारे बरताव और व्यवहार को प्रतिबिंबित करता है।

जो निजी वातावरण हम हमारे इर्दगिर्द पैदा करते है उसके प्रभाव को समझने का एक आसान तरीका है – मोबाईल फोन। यह कितनी अचंबित करनेवाली बात है, कि एक ही समय पर मोबाईल फोन की सैंकडो आण्विक तरंगे एक दुसरे को चिरते हुए दुनिया भर के लोगों की बातें एक दुसरे से करवाती है। और कुछ ऐसा ही हमारे जीवन में भी रोज होता है। जो वातावरण हम हमारे इर्दगिर्द और हमारे भीतर उत्पन्न करते है, वह हमे परमेश्वर के करीब ले जाएगा या फिर हमे उलझाकर उस विरासत से दूर ले जाएगा जो परमेश्वरने हमे दी है।

हमारा बरताव, हमारी जिंदगी और हमारे इर्दगिर्द की चीजों को हमेशा के लिए बदल सकता है, इस बात को हम कभी कबार समझते है। और कभी कभी यह समस्या पैदा कर सकता है जिसके लिए केवल हम ही दोषी ठहरेंगे। इसलिए, परिस्थितीयों की चिंता न करते हुए हमे खुशी से जिंदगी को जीना है, और जब हम नाकाम होते है तब हमे परमेश्वर की करुणा को खोजना है। जब कोई पछतावे भरे दिल से प्रायश्चित करता है, तो परमेश्वर दया का सागर है, और वे आपको जरुर क्षमा करेंगे।

गिनती की किताब यह वर्णन करती है, कि कैसे लोगोंने परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह किया, शिकायत की, बडबडाए और उनकी महिमा, आशिर्वाद और सुरक्षा से वंचित हो गए। फिर भी, परमेश्वर को कालिब का सकारात्मक बरताव अच्छा लगा और उसके बारे में वे बोलेः "लेकिन मेरे दास कालिब का बरताव दुसरों से अलग है। वह मेरे प्रति विश्वस्नीय रहा और इसलिए मैं उसे वादे की उस भूमी पर ले आऊँगा जिसका निरक्षण उसने किया है। और उसका वंश उस देश का अधिकारी होगा। (गिनती १४:२४)

यहोशूवा और कालिब इस्त्राएल की भूमी का निरक्षण करने गए थे (भूमि जिसपर दूध और शहद बहता है)। उन्होंने देखा कि वहाँ के लोग शक्तिशाली है, फिर भी कालिब ने कहा, "हम अभी उस देश पर अधिकार पाकर उसे अपना बना लें; क्योंकि निःसंदेह हम में ऐसा करने की शक्ति हैं।" अंत में, यहोशू और कालिबने उस वादे की भूमी को देखा भी और उसपर अधिकार भी पा लिया। यहाँ पर आप देख सकते हो, कि कैसे परमेश्वर में विश्वास करने का उनका बरताव और उनके दृश्यने उन दोनों के जीवन में ही नहीं बल्कि उन सारे लोगों के जीवन मे विजय ले आया जो उनके साथ थे।

परमेश्वर से उन्नति पाने और उनकी योजना को अपने जीवन मे पूरा करने के लिए यहोशू और कालिब परमेश्वर के वादों के साथ एक हुए। वे परमेश्वर के बरताव का अंश बने। परमेश्वर का बरताव क्या है? रोमियों की किताब कहती है, "जब से परमेश्वरने इस संसार की रचना की है, तब से हम उनके सनातन सामर्थ्य और दैविक स्वभाव, इन अदृश्य गुणों को हम उनके द्वारा रचे गए सारी चीजों में साफ रुप से देख सकते है, और समझ भी सकते है, ताकि मनुष्य कोई भी बहाना ना बनाए। (रोमियों १:२०)

परमेश्वर का वचन यह भी कहता है कि हम परमेश्वर को जानते है, लेकिन ना हमने कभी उनकी महिमा की और ना उनका धन्यवाद किया। इसलिए, हम हमारे दिलों में मूर्ख बन चूके है, क्योंकि हमारी सोच (विचार, बरताव, नजरिया) ही बेकार हो चुकी है। हमारा नजरिया सच्चाई की आत्मा और परमेश्वर के विरासत से सदृश्य होने के बजाय असत्य की आत्मा से सदृश्य हुआ है और हम इस संसार की निरर्थकता की ओर अपना ध्यान देते है। अगर हमारा बरताव परमेश्वर के साथ सही है तो हम हमारे जीवन के हर एक पहलू में उन्नति पा सकते है।

परमेश्वर आपके आगे चलेंगे और आपके लिए कार्य करेंगे। आप उनके प्रतीक बनोगे जो इस सारी धरती के चीजों पर अपना अधिकार रखेगा।

– संपादकीय डेस्क

आपके जीवन के लिए जागृती

८ डी.वी.डी. यों का समूह, जो सामर्थ्य से भरा है,
एक के पिछे एक लगातार शिक्षण जो आपकी सेहत,
परमेश्वर के आशिर्वाद, और आपके शरीर की तंदरुस्ती
जैसे बहुत सारे चीजों पर आधारीत है!
तो आज ही अपने बहतरीन बीज को बोइये
और इन डी.वी.डी. यों को पाईये!

गवाहियाँ

गवाहियाँ

पिछले तीन सालो से मेरा बेटा, आयुश, सिर दर्द से पिड़ित था। डॉक्टर उसका सीटी स्कैन (जाँच) कराना चाहते थे। लेकिन मै ब्रदर मैन्युएल की सेवकाई मे आयी और ध्यानसभा भी की। ब्रदर मैन्युएलने हमे परमेश्वर में विश्वास करने और रविवार के सब्बत की सभाओं में आने कहा। मै यह गवाही देना चाहती हूँ कि सब्बत की सभाओं में आने के बाद, अब मेरा बेटा बिल्कूल ठीक हो गया है। और अब तो उसे चश्मा भी पहनने की जरुरत नहीं है, क्योंकि अब उसे उसके कमजोर नजरों के लिए चंगाई मिल चुकी है और वह सबकुछ साफ साफ देख सकता है। इस महान चमत्कार के लिए मै परमेश्वर का धन्यवाद करती हूँ।

–रेखा गुप्ता

एक दिन जब मै फूटबॉल खेल रहा था तब, मेरी एडी अचानक से मरोड गयी। डॉक्टरने मुझसे कहा कि मेरे पैरों में छोटासा फ्रैक्चर हुआ है, और कम से कम तीन महीनो तक मै कूद नही सकता और नाही दौड़ सकता हूँ। लेकिन बुधवार की एक प्रार्थनासभा मे ब्रदर मैन्युएलने सभी मौजूद लोगों को कूदने को कहा। तब मै भी विश्वास से कूदा और तब से मेरी एडी में कोई दर्द नहीं है। इतना ही नही मुझे मैनिजमॅन्ट की पढ़ाई के लिए बिना कोई डौनेशन भरे ही प्रवेश मिला। मुझे चंगाई देने और मेरी मदद करने के लिए मै प्रभू को धन्यवाद देता हूँ।

–रोबिन फर्नांडो

मुझे गैस्ट्रीक अलसर की समस्या होने के कारण मेरे पेट मे हमेशा दर्द होता था। एक महिने तक ऐसा हुआ की जो खाना मै खाया करता था वह हजम ही नही होता था। और इसके लिए मैने जो भी इलाज किया उसका मुझपर कोई असर ही नहीं होता था। अंत मे मैने प्रार्थना याचना लिखकर प्रार्थना पेटी मे डाली और मुझे तुरंत चंगाई मिल गई।

–महेंद्र देसाई

डॉक्टरने बताया कि मुझे मधुमेह की बिमारी है और अस्पताल में भरती होना होगा। लेकिन मैने परमेश्वर मे अपना विश्वास रखा और यह निर्णय किया कि पहले मै ब्रदर मैन्युएल द्वारा आयोजित शुद्धिकरण की सभाओं में भाग लुंगी। और अब यह गवाही देते हुए मै बहुत ही खुश हूँ, कि मैने येशू मसीह के पवित्र नाम में चंगाई पा ली है। अब मेरे घर मे भी शांति है। ब्रदर मैन्युएल हमारे साथ हर रोज प्रार्थना करते है। मेरे पति, जो लकवे की बिमारी से पीडित थे, अब ठिक हो गए है। हमे भरपूरता से आशिर्वादित करने के लिए मै प्रभू का धन्यवाद करती हूँ।

–फिलोमीना लोबो

ठाणे शुभसमाचार घोषणा
नवंबर १४, २०११
डिसंबर ५, २०११

गोवा शुभसमाचार घोषणा
नवंबर १८–२०, २०११
डिसंबर ९–११, २०११

ध्यानसभा (रिट्रीट)
डिसंबर २–३,२०११

रविवार सबात
१० बजे से ६ बजे तक

बुधवार
इंडियन ऐड्युकेशन सोसायटी (I.E.S.)
माणिक सभा ग्रिहा
लिलावती हस्पताल के सामने,
बांद्रा (पश्चिम), मुंबई–४०००५०, भारत
समयः शाम ५:०० बजे

शुक्रवार
आगे की जानकारी के लिए
संर्पक करें – ६५००९७०१/०३

Live in the Spirit
BRO. MANUEL MINISTRIES

मुख्यकार्यालय
एस–४, ब्ल्यु नाइल अर्पाटमेन्टस
सी. एच. एस.लिमीटेड
प्लोट नंबर ३९, वरोडा रोड
बांद्रा (पश्चिम),
मुंबई –४०००५०, भारत

PRINTED BY Jyoti Printery